INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

21वीं शताब्दी में भारत–जापान का बढ़ता सामरिक रिश्ताः एक विश्लेषणात्मक अवलोकन

(India-Japan's Growing Strategic Relationship in the 21st Century: An Analytical Overview)

राज मलवाण
सहायक आचार्य
राजनीति विज्ञान विभाग,
श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय, सीकर (राजस्थान, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/09.2022-69384879/IRJHIS2209003

शोध सारांश :

दुनिया का सबसे बड़ा व्यावहारिक लोकतंत्र भारत और सबसे समृद्ध लोकतंत्र जापान दोनों ही आपस में गहरे रूप से बहुआयामी जुड़ाव के लिए तैयार हैं। भारत और जापान के मध्य विशेष सामरिक और वैश्विक साझेदारी न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से, बल्कि हितों की वर्तमान और दीर्घकालिक समानता के संदर्भ में अपने आप में विशिष्ट है। भारत–जापान में विशेष सामरिक और वैश्विक साझेदारी हाल के वर्षों में चीन के सैन्य और आर्थिक उदय के कारण भी बढ़ी है। भारत और जापान दो प्राचीन सभ्यताएं हैं और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लंबे इतिहास के हिस्से हैं। 1990 के दशक के शुरू में शीत युद्ध का अंत, वैश्वीकरण के युग में भारत द्वारा उदार आर्थिक सुधारों की शुरुआत, भारत की लुक ईस्ट पॉलिसी, भारत–अमेरिकी सम्बन्धों की शुरुआत और उभरते चीन द्वारा दिये जा रहे मुखरता के संकेतों ने भारत–जापान रणनीति एवं सामरिक साझेदारी के नये सम्बन्धों में बढ़ोत्तरी की है। एशिया की उभरती हुई सुरक्षा संरचना में हुए बदलावों ने भारत–जापान के मध्य रणनीतिक परिवर्तन के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया। भारत–जापान के मध्य द्विपक्षीय सम्बन्धों को बढ़ावा देने में अमेरिका ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। हिंद महासागर और दक्षिण चीन सागर में चीन द्वारा किये जा रहे अतिक्रमण और हस्तक्षेप ने भी दोनों देशों को विशेष सामरिक और रणनीतिक साझेदारी के लिए मजबूर किया है। इस शोध पत्र में हम 21वीं शताब्दी में भारत और जापान के बीच बढ़ते हुए सामरिक रिश्ते का एक विश्लेषणातमक अध्ययन करेंगे।

मुख्य शब्दः *लोकतंत्र, वैश्वीकरण, रणनीतिक एवं सामरिक साझेदारी, द्विपक्षीय सम्बन्ध, सुरक्षा संरचना, सामरिक रिश्ते, वैश्विक साझेदारी आदि।*

प्रस्तावना :

भारत–जापान रिश्ते के सामरिक केन्द्रबिन्दु :

भारत–जापान सम्बन्ध को एशिया में सबसे तेजी से बढ़ती रणनीतिक साझेदारी के रूप में वर्णित किया गया है। सामरिक रूप से भारत और जापान उन क्षेत्रीय और वैश्विक उद्देश्यों को साझा करते हैं, जो आपस में एक दूसरे के पूरक तो हैं, लेकिन समान रणनीतिक वाले नहीं है। इस तरह की रचनात्मक भावना में सबसे पुराने लोकतंत्र और एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच मित्रवत पहल इन्हें स्वाभाविक भागीदार बनाती हैं। पूर्वी एशिया और दक्षिण एशिया में प्रचलित रणनीतिक माहौल से आने वाले दिनों में चल रही भारत–जापान भागीदारी के मजबूत होने की संभावना है। इस साझेदारी का सकारात्मक तालमेल दोनों देशों के बीच चल रही साझेदारी को ओर मजबूत करने में

सहयोग देगा। दोनों देशों के बीच अनेक मुद्दों पर अहम साझेदारी चल रही है, जिनकी चर्चा निम्न बिन्दुओं के माध्यम से की जा रही है।

1. समुद्री सुरक्षा से सम्बन्धित चिंता :

समुद्री सुरक्षा एक ऐसा महत्वपूर्ण विषय है, जिस पर दोनों देशों का आपसी सहयोग उनके हित में है। दोनों देश समुद्र में जहाजों की आवाजाही तथा विमानों के उड़ाने भरने ओर बेरोक–टोक वैध वाणिज्य की आजादी का सम्मान करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। पिछले 16 वर्षों में, भारत और जापान अपने सम्बन्धों को मजबूत बनाने में कामयाब रहे हैं तथा समुद्री सुरक्षा द्विपक्षीय वार्ता के प्राथमिक केन्द्र बिन्दु के रूप में सामने आयी है। दक्षिण चीन सागर में नौवहन की स्वतंत्रता के मुद्दे ने भारत–जापान के बीच समुद्री सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा दिया है। भारत–जापान समुद्री सुरक्षा सहयोग 1999 में दोनों देशों के बीच तटरक्षक अभ्यास के साथ शुरू हुआ था। दोनों देशों के तट रक्षकों और नौसेनाओं के बीच सहयोग के मजबूत ढांचे को बढ़ावा दिया गया। इसके अलावा, 2004 में सुनामी कोर ग्रुप के गठन से सुनामी प्रभावित क्षेत्र की मदद की मंशा ने भारत, जापान, अमेरिका और आस्ट्रेलिया को फिर से एक साथ आने के लिए एक धरातल उपलब्ध करा दिया। वह संयुक्त अभियान एक बड़ी राजनीतिक सफलता थी और इससे क्षेत्रीय तथा क्षेत्र के बाहर की नौसेना के बीच के समुद्री अभ्यास के महत्व का पता चलता है। इस दरम्यान, भारत और जापान के बीच जागरूकता लाने और टकराहट को खत्म करने को लेकर सूचना साझेदारी के तहत एडन की खाड़ी में जलदस्यू विरोधी गतिविधियों के विरूद्ध भी प्रयास जारी रहे। इससे पता चलता है कि भारत और जापान ने इस क्षेत्र में अपने हित साझा किये हैं और प्राकृतिक आपदा, समुद्री डाकुओं की गतिविधियों और उन तमाम सुरक्षा खतरों को लेकर प्रभावी ढंग से प्रतिउत्तर देने का प्रयास किया है,जो हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में नौवहन की सुरक्षा एवं स्वतंत्रता को खतरे में डालते हैं। सन् 2015 से ही जापान वार्षिक रूप से आयोजित होने वाले मालाबार नौसेना अभ्यास का स्थायी सदस्य बना हुआ है। इस द्विपक्षीय समुद्री सुरक्षा सहयोग ने दोनों देशों की नौसेनाओं के लिए जापान–भारत समुद्री अभ्यास नाम संयुक्त अभ्यास को लेकर एक नया दरवाजा खोला है।[1]

अपने पहले ही कार्यकाल में जापान के प्रधानमंत्री शिन्जों आबे ने एशिया में 'सागरीय लोकतंत्र' के बीच तालमेल और 'दो समुद्रों के संगम' के सिद्धांत का जमकर प्रचार–प्रसार किया था। भारत धीरे–धीरे ही सही, मगर नौसेना के अधिकारियों की यात्राओं के आदान–प्रदान, एक–दूसरे के समुद्री विचार–विमर्श और दोनों देशों के मध्य संयुक्त नौसेना के अभ्यास आदि के माध्यम से जापान के निकट आता जा रहा है। जापान की एक अन्य पहल एशिया में जहाजों के खिलाफ समुद्री डाकू और सशस्त्र डकैती से लड़ने को लेकर क्षेत्रीय सहयोग समझौते के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय तट रक्षकों को एक साथ लाने का बहुपक्षीय प्रयास रहा है। 2014 में लगभग 30 वर्षों से लगे रहे प्रतिबन्धों को उठाते हुए जापानी सरकार ने एक नई रक्षा निर्यात नीति की घोषणा की। जापान की नई रक्षा निर्यात नीति ने भारत जापान रक्षा औद्योगिक सहयोग के लिए एक बड़ा अवसर प्रदान किया है।

सागरीय लोकतंत्र के रूप में, दोनों देशों ने नियम–आधारित अंतराष्ट्रीय व्यवस्था, नौवहन और उड़ान भरने की स्वतंत्रता, अप्रत्याशित कानूनी वाणिज्य और विवादों के शांतिपूर्ण निपटारे की बात की है। इसके अलावा भारत, अमेरिका और जापान ने जुलाई 2017 में बंगाल की खाड़ी में आयोजित होने वाले वार्षिक मालावार अभ्यास का उद्देश्य तीनों लोकतांत्रिक देशों की नौसेना के बीच अंतः क्रियाशीलता को बढ़ाना और हिन्द प्रशांत क्षेत्र में त्रिपक्षीय सहयोग को मजबूत करना था। भारत और जापान के मध्य गैर–पारंपरिक सुरक्षा खतरों, नौवहन, समुद्री विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग की संभावनाओं, समुद्री जैव–विविधता आदि को लेकर भी सहयोग में बढ़ोतरी हुई है। इसके अलावा दोनों देश जहाज रीसाइक्लिंग सुविधाओं, बंदरगाहों और अंतर्देशीय जल परिवहन, जहाज निर्माण और मरम्मत, अंतर्राष्ट्रीय समुद्री

संगठन पर सहयोग के मुद्दे जैसे समुद्री क्षेत्र में सहयोग पर ध्यान केंद्रित किए हुए हैं।[2]

जापान हिंद महासागर की रक्षा में भारत के सहयोग की इच्छा रखता है, क्योंकि यह महासागर भारत के लिए अति महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अपनी प्राथमिक ऊर्जा आपूर्ति के 94 प्रतिशत के लिए आयात पर निर्भरता के कारण जापान मध्य पूर्व से तेल आयात पर निर्भर है और तेल आयात हिंद महासागर के क्षेत्र से होकर ही जापान आता है। इसके अलावा जापान अपनी समुद्री सीमा की रक्षा हेतु अमेरिकी नौसेना पर भी निर्भर है, ऐसे में जापान क्षेत्रीय समुद्री मार्गों की रक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में भारत की क्षमताओं से अवगत हैं। ऊर्जा हितों की रक्षा के अलावा, जापान मलक्का जलसंधि, समुद्री डकैती और आतंकवादी घटनाओं के खतरों से भी अवगत है। टोक्यो और नई दिल्ली के पास शांति और स्थिरता को आगे बढ़ाने और व्यापक हिंद–प्रशांत क्षेत्र में महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों की रक्षा में मदद करने को लेकर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। चूंकि एशिया की अर्थव्यवस्थाएं समुद्र से बंधी हुई हैं, इसलिए जापान और भारत जैसे सागरीय लोकतंत्रों को एशिया में एक स्थिर, नियम–आधारित व्यवस्था बनाने में मदद को लेकर मिलजुलकर काम करना चाहिए।

2. चीन के आक्रामक रवैये के खिलाफ संतुलन :

नाटकीय रूप से बदलती एशियाई और वैश्विक भू–राजनीतिक व्यवस्था में तेजी से बढ़ता हुआ चीन जहां अपने द्विपक्षीय और क्षेत्रीय सम्बन्धों में तेजी से मुखर होता जा रहा है, वहीं प्रतिस्पर्धा और चुनौती के कई मोर्चों को भी खोल रहा है, क्योंकि यदि कोई देश उसकी अधीनता स्वीकार नहीं करता है, तो वह उसे डरा धमकाकर चुप कराने का प्रयास करता है। भारत और जापान के बीच सुरक्षा सम्बन्ध मुख्य रूप से चीन के उग्र रवैये को लेकर साझी चिंताओं से प्रेरित है, जिसे साथ दोनों देशों के राजनीतिक रूप से प्ररित क्षेत्रीय विवाद है। चीन और जापान के मध्य सेनकाकू या दिओयू द्विपों को लेकर भी गहरा विवाद है, साथ ही जापान–विरोधी राष्ट्रवाद को अक्सर चीन का शीर्ष नेतृत्व बढ़ावा देता है। भारत के साथ भी चीन का व्यवहार सही नहीं है, 1962 में चीन हमारे साथ धोखा कर चुका है। हाल ही में अरूणाचल प्रदेश की सीमा के पास भी दोनों देशों की सेनाएं आमने–सामने आ गयी थीं, जिससे स्थिती तनावपूर्ण हो गयी थी। इसके अतिरिक्त चीन ने पाकिस्तान का इस्तेमाल भारत को उपमहाद्वीप तक सीमित रखने के लिए एक उपयोगी भागीदार के रूप में किया है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की स्थायी सीट के प्रमुख दावेदार भारत और जापान दोनों देशों का चीन ने हमेशा विरोध किया है। सभी एशियाई देशों में, भारत और जापान ही चीन के दबावों का सामना करने और अन्य एशियाई देशों के प्रतिरोध को शामिल किए जाने को लेकर सबसे अच्छी स्थिति में है।

जापान और भारत पूर्वी चीन सागर, दक्षिण चीन सागर और हिन्द महासागर में चीन की बढ़ती नौसेनिक उपस्थिति और इसके विस्तार को लेकर गहरी चिन्ता जताते हैं। विशेष रूप से परेशानी इस बात की है कि बीजिंग दक्षिण पूर्व एशिया और उससे आगे के देशों पर अपने नियंत्रण को मजबूत करने के निरन्तर प्रयास में है। सैन्य शक्ति के अलावा, बुनियादी ढ़ांचे का निर्यात भी उन उपायों में से एक है। जिसका उपयोग चीन इन देशों को अपने प्रभुत्व के तहत लाने में कर रहा है। चीन द्वारा पाकिस्तान में परमाणु ऊर्जा सुविधाओं का निर्माण भी एक महत्वपूर्ण मामला है। दोनों देश सत्तावादी चीन के विपरीत उदार लोकतांत्रिक शासन को लेकर अपनी मूल प्रतिबद्धता को साझा करते हैं। चीन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत और जापान की स्थायी सीटों का भी विरोध करता है।[3]

टोक्यों और नई दिल्ली 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट से पहले भी एक दूसरे के नजदीक आ रहे थे। और जब चीन दोनों देशों की भू राजनीति के लिए सिरदर्द बन गया है, तो इन देशों का नजदीक आना स्वाभाविक है। चीन के पक्ष में बदलते वैश्विक संतुलन विरोधाभाषी रूप से भारत और जापान के बीच मजबूत रणनीतिक साझेदारी को प्रोत्सहित करता है। दिल्ली और टोक्यो, बीजिंग के साथ सहयोग के महत्व और इसके साथ टकराव के खतरे को लेकर पूरी तरह

सचेत है। यही कारण है कि चीन के साथ अपनी द्विपक्षीय समस्याओं के बावजूद भारत और जापान दोनों आर्थिक रूप से और सुरक्षा क्षेत्र में बीजिंग को जोड़ने में विश्वास करते हैं। चीन, भारत और जापान दोनों का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। चीन के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध क्षेत्र शांति के लिए भी एक महत्वपूर्ण कारक है। दोनों देश यह जानते हैं कि भविष्य के क्षेत्रीय व्यवस्था की किसी भी तरह की संरचना में चीन का प्रमुख स्थान होगा और इस क्षेत्र की मुख्य धारा में चीन को शामिल करना और उसे एक जिम्मेदार हितधारक बनाना बुद्धिमानी होगी।

3. आर्थिक संलग्नता का बढ़ावा देना :

भारत और जापान की गहन होती आर्थिक भागीदारी, पड़ौस में विकास परियोजनाओं को वित्त पोषित करके अपने प्रभाव को बढ़ाने के चीनी प्रयासों की मान्यता से प्रेरित है। चीन दक्षिण पूर्व एशिया को यूरोप से जोड़ने वाले भूमि और समुद्री मार्गों दोनों में बुनियादी ढ़ांचे परियोजनाओं से उस गलियारे को बनाने की योजना बना रहा है, जिसे वन बेल्ट और वन रोड़ ईनिशिएटिव (बी. एण्ड. आर) के नाम से जाना जाता है। परियोजना को दो हिस्सो में बांटा गया हैः– पहली, महाद्विपीय सड़क और दूसरी समुद्री मार्ग। जैसे–जैसे चीन अपने प्रभाव को पूरे विश्व में बढ़ा रहा है, वैसे–वैसे भारत और जापान भी आर्थिक परियोजनाओं को बढ़ावा दे रहे है। भारत और जापान के बीच आर्थिक क्षेत्र में हुआ हालिया उत्थान की स्थापना घरेलू और क्षेत्रीय सम्पर्क बढ़ाने वाले विकास और बुनियादी ढ़ांचे के विकास से जुड़ी है। दोनों देश ऐसे उद्देश्यों के आर्थिक साधनों का उपयोग कर रहे हैं, जिनमें उनके संबंधित सामरिक हितों को आगे बढ़ाने और साथ ही साथ उनके द्विपक्षीय सम्बन्धों को मजबूत करने और अन्य राष्ट्रीय उद्देश्यों को पूरा करना शामिल है।

चीन के वन बेल्ट वन रोड़ (ओबीओआर) पहल के बीच भारत और जापान के दो महाद्वीपों, एशिया और अफ्रीका के जोड़ने वाले समुद्र–गलियारे, एशिया–प्रशांत विकास गलियारे के निर्माण की योजना प्रस्तावित हैं, जिसमें इन दो महाद्वीपों को जोड़ने वाले भूमि गलियारे के विकास पर जोर दिया जा रहा है। हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में नौवहन की स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के मुद्दे पर भारत और जापान के बढ़ते सामरिक मिलन को दर्शाता है। जापान और भारत के बीच एक व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता 2011 में सम्पन्न हुआ था। इस समझौते में 2021 के अंत तक भारत और जापान के बीच कारोबार 900 से अधिक वस्तुओं के टैरिफ को खत्म करने की परिकल्पना की गई है।[4]

जापान 1958 से भारत को द्विपक्षीय ऋण और सहायता प्रदान करता रहा है तथा भारत 2005 से जापान की सहायता का सबसे बड़ा प्राप्तकर्त्ता रहा है। सन् 2016–17 में भारत जापान एफडीआई 4.7 अरब अमेरिकी डॉलर का था, जो पिछले साल की तुलना में 80 प्रतिशत अधिक है। इस समय जापान, बिजली परिवहन, पर्यावरण सम्बन्धी परियोजनाओं, बुनियादी ढ़ांचे, मानव आवश्यकताओं जैसी सम्बन्धित परियोजनाओं आदि में तेजी से आर्थिक विकास को लेकर भारत के प्रयासों का समर्थन कर रहा है। अहमदाबाद–मुंबई हाई स्पीड़ रेल, वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रण्ट कॉरिडोर, दिल्ली–मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर, बारह नए औद्योगिक टाउनशिप, चैन्नई–बैंगलुरू औद्योगिक कॉरिडोर सभी बड़ी परियोजनाएें हैं। यहां तक कि दिल्ली मेट्रो परियोजना को भी जापान की आर्थिक सहायता मिली है। आने वाले सालों में ये परियोजनाएं भारत के औद्योगिक मानचित्र को बदल कर रख देंगी। हाल के वर्षों में, भारत सरकार ने जापान को भारत के उस उत्तर पूर्व क्षेत्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया है, जो बुनियादी सुविधाओं की कमी के कारण अपेक्षाकृत पिछड़ा रहा है। हाल ही में भारत और जापान दोनों ने विभिन्न परियोजनाओं के सुचारू कार्यान्वयन को तेज करने के लिए एक समन्वय एजेंसी बनाई है।

भारत और जापान प्रौद्योगिकी के चरणबद्ध हस्तांतरण के लिए एक ठोस रोड़मैप विकसित कर रहे हैं, जो 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत मानव संसाधन और वित्तीय विकास तथा राजमार्गों, हाई स्पीड़ रेल प्रौद्योगिकी, संचालन एवं रखरखाव, भारत में पारंपरिक रेलवे प्रणाली के विस्तार एवं आधुनिकीकरण जैसे क्षेत्रों में समन्वय स्थापित करेगा।

भारत की बढ़ती बुनियादी ढ़ांचे की जरूरतों को जापानी पूंजी निवेश की आवश्यकता है। टोक्यो ने भारत के बढ़ते विनिर्माण और बुनियादी ढ़ांचे क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए 2014 से 2019 के बीच करीब 33 बिलियन डॉलर का निवेश किया है।

जापान की आधिकारिक विकास सहायता का उपयोग भारत में प्रमुख क्षेत्रों को आधुनिक बनाने के लिए किया जा रहा है, जिसमें परिवहन, संचार, बिजली, सिंचाई, बंदरगाह, पर्यावरण, स्वास्थ्य एवं तटीय परियोजनाएं आदि है।

4. परमाणु समझौता :

परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग में सहयोग को लेकर भारत–जापान समझौता 20 जुलाई, 2017 को लागू हुआ था। यह समझौता दोनों देशों के बीच बढ़ते सम्बन्धों में आने वली एक नई सुबह का संकेत दे रहा है। दिलचस्प बात है कि इस परमाणु समझौते ने टोक्यो की अपनी अत्याधुनिक परमाणु प्रौद्योगिकी को उस देश के साथ साझा करने की इच्छा पर हस्ताक्षर करने के संकेत दिए, जिसने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। इस समझौते से स्वच्छ ऊर्जा, आर्थिक विकास और शांतिपूर्ण तथा सुरक्षित दुनिया बनाने के उद्देश्य से पारस्परिक आत्मविश्वास और रणनीतिक साझेदारी को एक नया स्तर प्रदान किया। इस समझौते ने शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु ऊर्जा के विकास और उपयोग में दोनों देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया है। दोनों देशों द्वारा हस्ताक्षरित संयुक्त दस्तावेज, बातचीत के अनेक दौरों के बाद परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को लेकर एक रोड़मैप को सामने रखा है।

मौजूदा समझौता असैन्य परमाणु कार्यक्रम को लेकर भारत और जापानी उद्योगों के बीच के सहयोग का दरवाजा खोल देगा, क्योंकि इससे न केवल भारत को अत्याधुनिक परमाणु रिएक्टरों के निर्यात का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा, बल्कि अमेरिका और फ्रांस की कंपनियों को भी भारत के साथ परमाणु कारोबार में तेजी लाने के लिए समक्ष बनाएगा। किसी परमाणु सहयोग को सम्पन्न करने के लिए जापान पर पड़ता दबाव इस कारण भी है कि अमेरिका और फ्रांसीसी कंपनियों ने परमाणु ऊर्जा संयत्र स्थापित करने के लिए भारत से अनुबंध कर लिए हैं। दोनों अमेरिकी कंपनियां–जनरल इलेक्ट्रिक्स और वेस्टिंगहाउस इलेक्ट्रिक कंपनी, जिन्हें गुजरात और मध्यप्रदेश में परमाणु संयंत्र स्थापित करने के लिए अनुबंध प्राप्त हुए हैं या तो आंशिक रूप से या पूरी तरह से जापानी कंपनियों के स्वामित्व में है। जापान की हिताची ने 2006 में जीई के अंतर्राष्ट्रीय संयुक्त उद्यम में 40 प्रतिशत की हिस्सेदारी खरीदी थी, जबकि तोशिबा कोर्पोरेशन ने उसी साल वेस्टिंगहाउस इलेक्ट्रिक कंपनी को पूरी तरह से अधिगृहित कर लिया था। जापान के मित्सुबिशी परमाणु ईंधन कंपनी ने 2008 में फ्रांसीसी फर्म अबेरा में 30 प्रतिशत की हिस्सेदारी हासिल की थी। यह वही अबेरा है, जिसने महाराष्ट्र के जेतापुर में परमाणु ऊर्जा संयत्र स्थापित करने के लिए अनुबंध प्राप्त किया है। हालांकि यह परमाणु ऊर्जा कंपनियां जापानी तकनीक का उपयोग नहीं कर सकती, क्योंकि जापान ने 1976 से सैन्य और हथियारों से संबंधित प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण पर प्रतिबंध लगाया हुआ है।[5]

इस प्रकार, जापान के बिना भारत के साथ असैन्य प्रमाण समझौते में प्रवेश और इस प्रतिबंध को आसान बनाए बिना, इन कपंनियों के लिए परमाणु प्रौद्योगिकियों का उपयोग करना संभव नहीं होगा। जापान और भारत के बीच एक असैनिक परमाणु संधि यह देखती हुई भी महत्वपूर्ण है कि जापानी कंपनियों के पास उन सभी अमेरिकी और फ्रांसीसी फर्मों में हिस्सेदारियां है जो भारत में परमाणु ऊर्जा संयंत्र स्थापित करेगी।

परमाणु अप्रसार के प्रति जापान की आस्था और परमाणु बमों के हमले झेलने का एकमात्र अनुभव को देखते हुए जापान के लिए यह कोई आसान निर्णय नहीं था लेकिन आखिरकार दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था और उभरते सुरक्षा प्रदाता की क्षमता की रणनीति दृष्टि की जीत हुई। 2010 से, एक असैनिक परमाणु समझौते के लिए

द्विपक्षीय बातचीत शुरू हो गई थी, लेकिन 2011 में अचानक फुकुशिमा आपदा के कारण इस राह में एक बड़ी बाधा उत्पन्न हो गई। जापान कुछ लोगों का कहना था कि भारत के साथ होने वाला कोई परमाणु समझौता, परमाणु प्रसार संधि (एनपीटी) और व्यापक परीक्षण प्रतिबंध संधि (सीटीबीटी) को लेकर एक गैर हस्ताक्षरकर्ता परमाणु व्यवस्था को कमजोर करेगा।

नैतिक और परमाणु प्रसार निषेध की चिंताओं के अलावा, जापानी परमाणु उद्योग की कुछ व्यवहारिक व्यावसायिक चिन्ताएं, भारत–जापान परमाणु समझौते का एक प्रमुख संचालक थी। चूंकि भारतीय परमाणु प्रतिष्ठान मूल रूप से जापानी प्रौद्योगिकी में ही रुचि रखता था, न कि इसके रिएक्टरों में कोई रुचि थी। जापानी उद्योग, भारतीय परमाणु बाजार में प्रवेश को व्यावसायिक रूप से आकर्षक नहीं कर पाया। लेकिन अब भारत जापान से रिएक्टरों को खरीदने के लिए तैयार हो गया है तथा जापानी परमाणु उद्योग ने भी सौदे पर गंभीरता से काम करना शुरू कर दिया है।

नई दिल्ली 2022 तक अपनी मौजूदा परमाणु ऊर्जा क्षमता को लगभग दोगुना करने की योजना बना रखी है। भविष्य में, दोनों देशों ने जिन बातों पर अब तक सहमति बनाई है, जिन मुद्दों को सहमति की परिधि में लाए हैं, उन तमाम बातों को ठोस रूप देना है और व्यापार एवं निवेश, हरित ऊर्जा तथा संचार समेत सभी क्षेत्रों में भारत–जापान संबंधों की लगातार बढ़ती एक स्पष्ट गति का मार्ग प्रशस्त करना है। यह समझौता दोनों देशों के लिए परस्पर लाभकारी होगा। भारत को इससे आवश्यक बिजली तथा तकनीक मिलेगी तथा जापान को इससे अपनी कंपनियों के लिए भारत जैसा विशाल बाजार मिलेगा।[6]

5. रक्षा सहयोग :

भारत और जापान के बीच रक्षा और सुरक्षा हाल ही के वर्षों में व्यवस्थित रूप से विकसित हुए हैं और अब यह रिश्ता भारत–जापान रणनीति साझेदारी का एक मजबूत स्तंभ का निर्माण कर रहा है। कई बहुपक्षीय संगोष्ठियों और मंचों की भागीदारी के अलावा रक्षा मंत्रालयों के बीच वार्षिक पारस्परिक यात्राएं, रक्षा सचिव और उप–मंत्री स्तरीय रक्षा नियुक्ति वार्ताएं आदि के द्वारा भी दोनों देशों के मध्य रक्षा सहयोग को बढ़ावा मिल रहा है।

रक्षा प्रौद्योगिकीय हस्तांतरण साझेदारी में मजबूत द्विपक्षीय संबंधों को पूरा करने के लिए दोनों देशों पर बढ़ते दबाव के साथ अगले कुछ वर्षों में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि दोनों देशों के मध्य प्रगति हो रही है या नहीं। रक्षा सौदों पर ठोस प्रगति की कमी इस संदेह की गुंजाइश बनाती है कि यह भागीदारी सैन्य अभ्यास और वरिष्ठ अधिकारियों के बीच संवाद तक ही सीमित हैं। दोनों देश, रक्षा सहयोग और विशेष रूप से सैन्य उपकरणों तथा दोहरी उपयोगिता वाली प्रौद्योगिकियों के उत्पादन और विशेष रणनीतिक ढांचे के तहत समग्र सैन्य भागीदारी को बढ़ाने के लिए तैयार हुए हैं। दोनों पक्ष मानव रहित भू–वाहनों और रोबोटिक्स के क्षेत्रों में अनुसंधान सहयोग के लिए तकनीकी चर्चा शुरू करने पर भी सहमत हुए है। भारत अपनी नौसेना के लिए जापान से आधुनिक तकनीक के युद्धपोत खरीदने की योजना बना रहा है। दिसम्बर 2015 में हस्ताक्षर किए गए दो समझौते–रक्षा उपकरण और प्रौद्योगिकी सहयोग के हस्तांतरण सम्बन्धित समझौते तथा वर्गीकृत सैन्य सूचना की सुरक्षा के लिए सुरक्षा उपायों सम्बन्धित समझौते ने दोनों देशों के मध्य रक्षा सहयोग में एक नई शुरुआत की। दोनों पक्ष नौसेना, वायु सेना और दोनों देशों की स्थल सेना के बीच जुड़ाव को गहरा करने के अलावा आतंकवाद विरोधी अभियान के सहयोग को बढ़ाने पर भी सहमत हुए। दोनों पक्षों ने जापान के अधिग्रहण, प्रौद्योगिकी एवं रसद एजेंसी और भारत के रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के बीच रचनात्मक रिश्ते का भी स्वागत किया। भारत–जापान रक्षा सम्बन्ध तेजी से बदलती भू–राजनीतिक वास्तविकताओं के परिणामस्वरूप वर्तमान में बहुत मजबूत हो चुके हैं।[7]

निष्कर्ष :

चूंकि भारत और जापान के बीच सभ्यतागत संपर्क लगभग 1450 साल पहले शुरू हुए थे, तथा दोनों देश एक–दूसरे के विरोधी कभी नहीं रहे। द्विपक्षीय सम्बन्ध वैचारिक, सांस्कृतिक या क्षेत्रीय जैसे किसी भी तरह के विवाद से मुक्त रहे है।

आज भारत और जापान वैश्विक एवम् क्षेत्रीय सुरक्षा, आंतकवाद विरोधी अभियान, परमाणु निःशस्त्रीकरण, समुद्री सुरक्षा, ऊर्जा सहयोग, जलवायु परिवर्तन तथा संयुक्त राष्ट्र में सुधारों सहित आपसी हितों के व्यापक क्षेत्रों में एक–दूसरे का सहयोग कर रहे है। एक दूसरे के राष्ट्रीय और राजनीतिक हितों की पारस्परिक धारणाओं में उल्लेखनीय सुधार हुआ है और दोनों देशों के नए रणनीतिक मिलन और समानताएं नजदीकी भागीदारी को लेकर अभूतपूर्व अवसर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

इन तेजी से बदलने वाले घटकों ने भारत और जापान को एक दूसरे के बेहद करीब आने के लिए मजबूर कर दिया है और दोनों देश द्विपक्षीय सम्बन्धों में एक बड़े सुधार के शीर्ष पर दिखाई देते हैं। जापान ने हाल ही में चीन के साथ डोकलाम संकट के दौरान भारत का समर्थन करके अपनी गहरी दोस्ती को दर्शाया है। अहमदाबाद शहर में जापान के प्रधानमंत्री की यात्रा और बुलेट ट्रेन परियोजना के उद्घाटन ने दोनों देशों के मध्य आर्थिक संबंधों को और अधिक मजबूती दी है।

अतः हम कह सकते हैं कि 21वीं शताब्दी में भारत–जापान के मध्य बढ़ता सामरिक और रणनीतिक रिश्ता न केवल एशियाई बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए प्रभावी साबित होगा।

संदर्भ :

1. शर्मा एम. डी., भारत–जापान सम्बन्धः चुनौतियां और अवसर, कनिष्ठ पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2004
2. नरसिम्हा पी.ए., भारत और जापानः रिश्तों के नए आयाम, लांसर बुक्स, नई दिल्ली, 2003
3. डॉ. कपिला सुभाष, भारत–जापान के मध्य रणनीतिक वार्ता, लांसर बुक्स, नई दिल्ली, 2007
4. गुप्ता रूकमणी, भारत–जापान के मध्य नये युग की शुरुआत, कनिष्ठ पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008
5. मूर्ति नारायण, भारत और जापानः राजनीतिक और ऐतिहासिक सम्बन्ध, लांसर बुक्स, नई दिल्ली, 2007
6. सी. राजा मोहन, भारत और जापान के मध्य रणनीतिक सम्बन्ध, लांसर बुक्स, नई दिल्ली, 2005
7. कपूर राजेश, भारत और जापान के मध्य नये दौर की शुरुआत, कनिष्ठ पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2012